International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(2): 54-56

International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(2): 54-56
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-02-2016
Accepted: 16-03-2016

कल्पना देशमुख
डेक्कन कॉलेज, पुणे

Correspondence
कल्पना देशमुख
डेक्कन कॉलेजए पुणे

निरुक्त 2.14 : सूर्यवाचक शब्दों का अध्ययन

कल्पना देशमुख

शोधसार

निरु. 2.14 में वर्णित आदित्य और द्युलोक के लिए छह साधारण नामें हैं। ये छह नामें ऋग्वेद में सूर्य के लिए भी प्रयुक्त हुई दिखाई देती हैं। इसलिए इन छह आदित्यवाचक नामों में से सूर्य के लिए प्रयुक्त नामों का अध्ययन करना यह प्रस्तुत शोधनिबंध का उद्देश्य है। यहाँ ऋग्वेद सायणभाष्य और ग्रिफिथ भाष्य के आधार से इन नामों की विवेचनात्मक चर्चा की है।

संकेतसूची : ऋग्वेद, ऋय निघण्टु, निघ., निरुक्त, निरु., काठकसंहिता, का. सं., सायणभाष्य. सा. भा.

प्रस्तावना

निघण्टु 1.4 में [1] 'स्व:, पृश्नि:, नाक:, गौ:, विष्टप्:, नभ:' ये छह साधारण नामें हैं। ये छह नामें ऋग्वेद में आदित्य और द्युलोक के लिए समान है ऐसा निरु. 2.14 में यास्काचार्यने अपने भाष्य में कहा है। यहाँ यास्काचार्यने आदित्य शब्द की व्युत्पत्ती दी है। 'आदत्ते रसान्। आदत्ते भासं ज्योतिषाम्। आदीप्तो भासेति वा। अदिते पुत्र: इति वा॥' इस तरह से यास्काचार्यके विचार से सूर्य एक आदित्य है। लक्ष्मण सरुपने इस व्याख्या में कहा है - He takes the fluids, he takes (i.e. Eclipscs) the light of the luminaries or he blazes with luster or he is the son of Aditi. आदित्य याने 'जो रसों का ग्रहण करता है, जो नक्षत्रों का प्रकाश ग्रहण करता है, जो अपने प्रकाश से प्रकाशता है, जो अदिती का पुत्र है'। सूर्य के लिए इन प्रयुक्त नामों को ध्यान में रखते हुए निरु. 2.14 में उल्लेखित छह नामों का विस्तृत रूप से विश्लेषण आगे किया है।

1) स्वर्

निरु. 2.14 में स्वर् शब्द की व्युत्पत्ती इस प्रकार से है। 'स्वरादित्यो भवति। सु अरण:। सु ईरण:। स्वृतो रसान्। स्वृतो भासं ज्योतिषाम्। स्वृतो भासेति वा।'

निरुक्त भाष्यकार लक्ष्मण सरुप की व्याख्या में Svar means the Sun; it is very distant, it has well dispersed (the darkness), it has well penetrated the fluids, it has well penetrated the light of the luminaries, or it is pierced through with light.

स्वर् याने 'आदित्यको स्वर् कहा जाता है। जो अच्छी तरहसे गमन करता है। पृथ्वी के रस जिसके पास जाते हैं। तेजोगोलक का तेज जिसके पास जाता है।'

सु + अरण = अर्, सु + इरिणः = इर् और सु + ऋ = स्वर् इस प्रकार से स्वर् शब्द के व्याख्याओं में अर्, इर्, ऋ ये धातू दिखाई देते हैं।

ऋ.1.112.5 [2] और ऋ.1.148.1 इन[3] ऋचाओं में स्वर् यह नाम सूर्य के लिए आया है। इन ऋचाओं के भाष्य में सायणचार्यने निरु. 2.14 मे आये विवेचन के साथ स्वर् याने सूर्य ऐसा कहा है। [4] ग्रिफिथने तेजस्वी प्रकाश और सूर्य ऐसा स्वर् नाम का अर्थ किया है।

---

[1] स्व:, पृश्नि:, नाक:, गौ:, विष्टप्:, नभ: इति षट् साधारणानि। निघ.1.4

[2] याभी रेभं निवृतं सितमद्भ्य उद्वंन्दनमैरयतं स्वर्दृशे। याभि: कण्वं प्र सिषासन्तमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ ऋ.1.112.5

[3] मथीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं विश्वदेव्यम्। नि यं दधुर्मनुष्यासु विक्षु स्व१र्ण चित्रं वपुषे विभावम्॥ ऋ.1.148.1

[4] स्व: आदित्यं, तदुक्तं यास्केन, 'स्वरादित्यो भवति सु अरण: सु ईरण:' (निरु. 2.14) इति। ऋ. सा. भा. 1.112.5

गृत्समद ऋषी विरचित 2.2 सूक्त के 7; 8;10 इन ऋचाओं में स्वर् नाम स्व१र्ण इस तरह से आया है और सूर्य के लिए प्रयुक्त हुया है । 2.8.4; 2.21.4; 2.24.3; 2.24.4; 4.10.3; 4.45.2; 5.14.4; 5.45.1; 5.46.3; 6.29.3; 7.10.2; 7.34.19; 9.113.7; 10.43.9; 10.68.9; 10.123.7
इन ऋचाओं में स्वर् नाम सूर्य और सूर्य के प्रकाश के लिए आया है ।

2) पृश्नि

पृश्निरादित्यो भवति । प्राश्नुत एनं वर्ण इति नैरुक्ताः । संपृष्टो रसान् । संपृष्टा भासं ज्योतिषाम् । संपृष्टो भासेति वा।
prsni means the Sun. 'It is thoroughly pervaded by the bright color' say the etymologists. It closely unites the fluids, it closely unites the light of the luminaries. It is closely united with light.
पृश्नि याने सूर्य । सूर्य अपने तेज से सब व्याप्त करता है ऐसा निरुक्तकार कहते हैं । सूर्य रसों को स्पर्श करता है । सूर्य का प्रकाश सब व्याप्त करता हैं ।
4.3.10; 5.47.3; 9.83.3; 10.189.1 इन चार ऋचाओं में पृश्नि यह नाम सूर्य के लिए आया है । इनमेंसे 4.3.10 इस [5] ऋचा में सायणाचार्यने पृश्नि याने सूर्य कहा है । ग्रिफिथने पृश्नि ऐसा ही नाम अपनी व्याख्या में दिया है । ऋ. 5.47.3 इस [6] ऋचा में सायणाचार्यने पृश्नि याने सूर्य कहा है । ग्रिफिथने लाल रंग का पक्षी जिसके पर मजबूत है ऐसा स्वर्ग के बीचो बीच स्थापित किया है वो पृश्नि है ऐसा कहा है ।

ऋ. 9.83.3 इस ऋचा में [7] सायणाचार्यने अपने भाष्य में कहा है । [8] 'पृश्नि याने आदित्य है । सूर्य जिसका आत्मा है ऐसे सोम की स्तुती की जा रही है । सूर्य किरणों का प्रकाश चाँद ग्रहण करता है । उषा के समय से विस्तारित होने वाला यह पृश्नि सबको प्यारा है ।' ग्रिफिथ के विचार से नाना रंगों का बैल जो सुबह होते ही प्रकाश देता है ऐसा पृश्नि है ।

ऋ.10.189.1 इस [9] सूर्यसूक्त की ऋचा में पृश्नि याने सूर्य है । यहाँ सायणाचार्य और ग्रिफिथ दोनों के विचार से पृश्नि याने सूर्य है । उपर वर्णित ऋचाओं में पृश्नि याने सूर्य इस व्याख्या में विविध रंगों वाला और किरणोंसे प्रकाश देने वाला सूर्य अपेक्षित है ऐसा दिखाई देता है ।

3) नाक

नाक आदित्यो भवति । [नेता रसानाम्] नेता भासाम् । ज्योतिषां प्रणयः ।
Nāka means the Sun. [the bearer of fluids], bearer of lights, leader of luminaries.
आदित्य को नाकम् ऐसा कहते है । पृथ्वी के रसों को जो ग्रहण करता है । ग्रह नक्षत्रों का तेज ग्रहण करता है । जो ग्रह नक्षत्रों का नेता है । का. सं. 21.2 मे [10] नाकम् याने ऐसा लोक जहाँ दुख नही है । केवल पुण्य कृत ही यहाँ जाते हैं ।

ऋ. 5.54.12 इस [11] ऋचामे नाकम् इस नामका अर्थ सूर्य है । सायणाचार्यने [12] आदित्य और ग्रिफिथने दिव्य चमकिला फल ऐसा अर्थ इस नाम का दिया है।

ऋ. 7.86.1 इस [13] ऋचामे नाकम् याने सूर्य है । सायणाचार्य के विचार से [14] आदित्य और ग्रिफिथ के विचार से स्वर्ग के creature's जिनमें एक सूर्य है । ऋ. 10.121.5 इस ऋचामे नाकः याने आदित्य है । सायणाचार्यने आदित्य और ग्रिफिथ ने प्रकाश ऐसा अर्थ किया है ।
उपर वर्णित तीन ऋचाओं में द्युलोक में रहने वाले सूर्य को संबोधित करते हुये नाकः यह नाम आया है ।

4) गौ

गौरादित्यो भवति । गमयति रसान् । गच्छत्यन्तरिक्षे ।
Gauh means the Sun; it causes the fluids to move, it moves in the sky.
आदित्यको गौः ऐसा कहते है । जो अपने किरणों से रसों को उपर भेजता है । जो अन्तरिक्ष में रहता है ।
गौः इस नाममे गम् धातू दिखाई देता है ।
ऋषी नोधस गौतमके इन्द्रसूक्तमे 1.62.5 इस [15] ऋचा में सूर्य किरणों को गो ऐसा कहा है । ऋषी प्रजापति वैश्वामित्र अथवा वाच्य के विश्वेदेवसूक्तमे ऋ. 3.56.2 इस [16] ऋचामे संवत्सरका वर्णन करते समय सूर्यको अपने किरणों द्वारा प्रकाश देने वाली गाय माना है । सायणाचार्यने गावः इस नामका अर्थ रश्मयः और ग्रिफिथ ने cow ऐसा शब्द प्रयोग किया है ।
ऋषी वामदेव गौतम के 4.1.16 और 4.22.4 इन ऋचाओं में गोः यह नाम सूर्य के लिए आया है । सायणाचार्य के विचार से गोः याने सूर्य और ग्रिफिथने the red one ऐसा कहा है ।
ऋषी प्रतिरथ आत्रेय के विश्वेदेव सूक्त में 5.47.4 इस [17] ऋचामे और ऋषी भरद्वाज बार्हस्पत्यके उषासूक्त में 6.64.3 इस [18] ऋचा में सूर्य किरणों के लिए गावः नाम आया है ।
उपर उल्लेखित ऋचाओं में गौः यह नाम सूर्य के गमनशील किरणों के लिए और सूर्य के लिए भी प्रयुक्त हुआ दिखाई देता है ।

5) विष्टप

विष्टवादित्यो भवति । आविष्टो रसान् । आविष्टो भासं ज्योतिषाम् । आविष्टो भासेति वा ।
Vistap means the Sun; it has pervaded by the fluids, it has pervaded the light of the luminaries, or it is pervaded with light.
विष्टपः याने आदित्य । जो रसों में विराजमान है । जो ग्रह गोलकों के तेजों में विराजमान है ।
8.69.7 इस [19] ऋचामे विष्टपः सूर्यका स्थान दिखाने के लिए आया है ।

---

[5] क्रतेन हि ष्मा वृषभश्चिदक्तः पुमाँ अग्निः पयसा पृष्ठयेन । अस्पन्दमानो अचरद्वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः ॥ ऋ.4.3.10

[6] उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश । मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ॥ ऋ.5.47.3

[7] अरूरुचदुषसः पृश्निरग्निय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः । मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ॥ ऋ.9.83.3

[8] पृश्निः आदित्यः । पृश्निरादित्यो भवति प्राश्नुतं एनं वर्णः निरु. 2.14 इति निरुक्तम् ॥ ऋ. सा. भा.9.83.3

[9] आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ऋ.10.189.1

[10] न वै अमुं लोकं जग्मुषे किंचन अकम् । पुण्यकृतः हि एव तत्र गच्छन्ति । का. सं.21.2

[11] तं नाकमर्यो अगृभीतशोचिषं रुशत्पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ । समच्यन्त वृजनातित्विषन्त यत्स्वरन्ति घोषं वितंतमृतायवः॥ ऋ.5.54.12

[12] नाकम् आदित्यम् । नास्मिन्नकमस्तीति नाकः । ऋ.सा. भा. 5.54.12

[13] धीरा त्वस्य महिना जनूंषि वि यस्तस्तम्भ रोदसी चिदुर्वी । प्र नाकमृष्वं नुनुदे बृहन्तं द्विता नक्षत्रं पप्रथच्च भूम ॥ ऋ.7.86.1

[14] नाकम् आदित्यं नक्षत्रं च । ऋ.सा. भा. 7.86.1

[15] गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म वि वरुषसा सूर्येण गोभिरन्धः। वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानु दिवो रज उपरमस्तभायः ॥ ऋ.1.62.5

[16] षडभागाँ एको अचरन्बिभर्त्यूतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः । तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दर्श्येका ॥ऋ.3.56.2

[17] चत्वार ईं बिभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते । त्रिधातव परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान् ॥ ऋ.5.47.4

[18] वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगामुर्विया प्रथानाम् । अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून्बाधते तमो अजिरो न वोळहा ॥ ऋ.6.64.3

[19] उद्यद्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि । मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ॥ ऋ.8.69.7

सायणाचार्यने 'विष्टपं सूर्यस्य स्थानं' ऐसा कहा है । [20] और ग्रिफिथ ने appointed place कहा है ।

9.113.10 इस [21] ऋचा में सूर्य के द्वारा प्रकाश मान स्थान दर्शाने के लिए विष्टप् यह नाम आया है । इस ऋचा में सायणाचार्य के विचार से [22] सूर्य और ग्रिफिथ के विचार से चाँद ऐसा अर्थ विष्टप: नाम का है । इन ऋचाओं में विष्टप: यह नाम केवल प्रकाश दर्शाता है ।

6) नभ

नभ आदित्यो भवति । [नेता रसानाम्] नेता भासाम् । ज्योतिषाम् प्रणय: । अपि वा भन एव स्याद्विपरीत: ।

Nabhas means the Sun. the bearer of fluids, bearer of lights and leader of luminaries. Or else it may be the word nabhas itself, in reversed order, it is not that it does not shine.

नभ याने आदित्य है । रसों का नेता है । तेजो गोलकों का नेतृत्त्व करने वाला है । तेज का वाहक है । नभः यह शब्द भनः ऐसा होना चाहिए । जो प्रकाशता नहीं, ऐसा नहीं अर्थात् प्रकाशता है वो आदित्य है । 8.96.14 इस ऋचा में नभ याने 'अंतरिक्ष में विराजमान सूर्य के जैसा [23] ऐसा अर्थ है । कारण सूर्य नभ से आकार पृथ्वी को प्रकाश मान बनाता है । 9.74.4 इस ऋचा में नभ याने 'नभ में रहने वाले सूर्य के जैसा [24] ऐसा अर्थ आया है । सायणाचार्य ने नभ इस नाम का अर्थ 'अंतरिक्ष में रहने वाले सूर्य के जैसा' ऐसा किया है । ग्रिफिथ ने animated cloud ऐसा किया है । उपर वर्णित दो ऋचाओं में नभ में सूर्य रहता है अथवा भ्रमण करता है । इसलिए पूरे नभ को सूर्य के जैसे प्रकाशमान माना है ऐसा दिखाई देता है ।

सायणाचार्य और ग्रिफिथ के भाष्य का सारांश रूप में तुलनात्मक अध्ययन

आदित्यवाचक शब्दों का निरूपण करते समय सायणाचार्य ने ऋचाओं के अपने भाष्य में निरु. 2.14 में आये यास्काचार्य के विवेचन के आधार से सूर्यवाचक अर्थ दिया है ।

ग्रिफिथ ने स्वर् और गो: इन नामों का अर्थ सूर्य किरणे और सूर्य से संबंधित किया है । सूर्य से संबंध दर्शाने वाला पृश्नि यह नाम ऐसे ही भाष्य में लिया है । नाकम् याने दिव्य स्वर्ग और विष्टप: याने दिव्य स्थान या चाँद ऐसा अर्थ किया है। नभ: इस नामका अर्थ the sky और animated cloud ऐसा किया है । इस तरहसे ग्रिफिथ ने स्वर्, गो: और पृश्नि इन तीन नामों को सूर्यवाचक अर्थ मे ग्रहण किया है ।

निरीक्षण

1) ऋग्वेद में सभी मंडलों में सूर्य, सूर्यका प्रकाश, सूर्य का तेज और सूर्य के जैसा प्रकाशमान ऐसा अर्थ दर्शाने के लिए स्वर् यह नाम आया है । विशेषत: स्वर् यह नाम सूर्य का प्रकाश अथवा तेज का वर्णन करता है ।

2) विविध रंगों का और किरणों से प्रकाशने वाला सूर्य दर्शाने के लिए पृश्नि यह नाम ऋचाओं में आया है ।

3) जिस स्थान में थोड़ा सा ही दुख नहीं ऐसे लोक को नाकम् कहा है । इस तरह से तीन ऋचाओं में सूर्य के स्थान को नाकम् कहा गया है ।

4) सूर्य और सूर्य के गतीशील किरणों को गौ: ऐसे कहा है ।

5) सूर्य जहाँ रहता है वो स्थान दर्शाने के लिए विष्टप: यह नाम आया है ।

6) सूर्य के कारण नभ प्रकाशता है । ऐसे सूर्य प्रकाशीत नभ का उल्लेख नभ: इस नाम से हुआ है ।

निष्कर्ष

सायणाचार्य और ग्रिफिथ के भाष्य का तुलनात्मक अभ्यास करने के बाद ये कहा जा सकता है की ऋग्वेद में स्वर्, पृश्नि और गौ: ये नाम प्रत्यक्ष सूर्य के लिए और सूर्य के किरणों के लिए प्रयुक्त हुये हैं । नाकम्, विष्टप: और नभ: ये नाम सूर्य जहाँ रहता है उस स्थान को संबोधित करते हुए ऋचाओं में विराजमान हैं ।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. चित्राव सिद्धेश्वरशास्त्री, (1996), ऋग्वेदका मराठी भाषांतर, भारतीय चरित्रकोश मंडल, पुणे ।
2. लक्ष्मण सरुप, निघण्टुसमन्वितं निरुक्तम्, (1920), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
3. सोनटक्के और धर्माधिकारी (संपा.), (1936), ऋग्वेदसंहिता सायणभाष्य के साथ 1-10 मंडल, वैदिक संशोधन मंडल, पुणे ।
4. Ralph T. H. Griffith, (1896), The Hymns of the Rigveda, Kotagiri (Nilgiri), 2nd edition.

[20] विष्टपं सूर्यस्य स्थानं, सप्त इत्यनेन देवलोकानामुत्तममेकविंश स्थानमुच्यते आदित्यस्यैकविंशत्वात् । तथा च ब्राह्मणं 'द्वादश मासा: पञ्चर्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविंश । (ऐ.ब्रा.1.30) ऋ. सा. भा. 8.69.7

[21] यत्र॒ कामा॑ निका॒माश्च॒ यत्र॑ ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टप॑म् । स्व॒धा च॒ यत्र॑ तृ॒प्तिश्च॒ तत्र॒ माम॒मृतं॑ कृ॒धीन्द्रा॑येन्दो॒ परि॑ स्रव ॥ ऋ.9.113.10

[22] [22] यत्र लोके ब्रध्नस्य सर्वेषां प्रज्ञापकस्य । यद्वा । सूर्येण विना कर्माणि न घटन्त इति सर्वेषां कर्मणां मूलभूतस्यादित्यस्य विष्टपं सहस्थानं यत्र विद्यते तत्र लोके । ऋ. सा. भा. 9.113.10

[23] द्र॒प्सम॑पश्यं॒ विषु॑णे॒ चर॑न्तमुपह्व॒रे न॒द्यो॑ अंशु॒मत्या॑: । नभो॒ न कृ॒ष्णम॑वतस्थि॒वांस॒मिष्या॑मि वो वृषणो॒ युध्य॑ता॒जौ ॥ ऋ. 8.96.14

[24] आ॒त्म॒न्वन्नभो॑ दुह्यते घृ॒तं पय॑ क्र॒तस्य॒ नाभि॑रमृ॒तं॑ वि जा॑यते । स॒मी॒ची॒ना: सु॒दान॑व: प्रीणन्ति॒ तं नरो॑ हि॒तमव॑ मेहन्ति॒ पेर॑व: ॥ ऋ. 9.74.4